रात्रिक्लास 7/11/68 :– हम स्टूडेंट हैं, यह पढ़ रहे हैं। यह सुनावे तो भी अनुभव है। हम स्टूडेंट हैं बापदादा के, यह पढ़ाई पढ़ रहे हैं। हम यह बनने लिए पढ़ते हैं। पुरानी दुनिया तो बदलनी ही है। यह भी तुम जानते हो। और कोई को भी मालूम नहीं कि दुनिया बदलती है। तुम नई दुनिया लिए राजयोग सीखते हो। स्टूडेंट किसके हो? बाप दादा के। वही बाप, टीचर, गुरु है। यह दिल में याद रहना चाहिए। हमको भगवान पढ़ा रहे हैं। भगवान-भगवती होते ही हैं सतयुग में। यह घड़ी-2 याद आना चाहिए हमको भगवान पढ़ाते हैं। वह बाप है। सतयुग माना नई दुनिया में ज़रूर जावेंगे, उनको अमरलोक कहते हैं। फिर शिवालय याद करते रहो। शिवबाबा से वर्सा मिलता है। हम रहने वाले ही हैं शिवालय के। शिवालय ही हमारे बाप का वर्सा है। बाप कहते हैं तुम कुछ भी नहीं जानते थे। अभी बाप को जानने से सभी कुछ जान जाते हो। तुम जानते हो बाप आये हैं हमारे सभी दुख करने(हरने)। गायन भी है दुख हर्ता, सुख कर्ता। यहाँ बच्चे (आते) हैं तो नई जिन्दगी मिलती है। अर्थात् नई दुनिया के लिए नई जिन्दगी। तो अपने दिल को खुश रखना है। कई धंधे में लगे रहते हैं तो खुशी नहीं रहती है। बच्चे जानते हैं, मधुबन में तो अपना परिवार ही होगा। यहाँ स्मृति अच्छा रह सकती है। यहाँ वायुमण्डल बड़ा अच्छा है। कोई किचड़ा नहीं। चित्र भी लगे पड़े हैं। कृष्ण देखो, स्वर्ग याद आवेगा। घड़ी-2 याद आने से कल्याण ही है। बाहर में लिख दो, बेहद के बाप परमात्मा शिव से बेहद का वर्सा कैसे मिलता है आकर समझो। बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए; रोज़ बाप याद प्यार देते हैं। रोज़ याद प्यार सुनने से खुशी का पारा चढ़ जाना चाहिए। आधा भोजन खुशी में हो जाना चाहिए। बाकी आधा खाना चाहिए। सिमरण करना चाहिए कौन याद प्यार देते हैं। फिर 5000 वर्ष बाद भगवान का पत्र मिलेगा। कोई के ख्याल में नहीं होगा भगवान कैसे पत्र लिखते हैं। जितना याद करेंगे, सतोप्रधान बनते जावेंगे। गम से बेगम होना है। यह सभी दुख दूर हो जावेगा। ऐसा न हो, सज़ा खानी पड़े। जो मोचरा खाने वाले होंगे उनको सा॰ होगा। सा॰ करते सज़ा भोगते जावेंगे। इसको कहा जाता है कयामत का समय। हिसाब-किताब चुक्तू का समय। कोई का भी पाप का हिसाब-किताब रहता नहीं। यह तो समझते हो ना। गफलत करने से बहुत पछताना होगा। स्टूडेंट गफलत करते हैं तो नापास हो जाते हैं। तुम्हारा तो एक सेकण्ड भी व्यर्थ न जाना चाहिए। नम्बरवार तो होते ही हैं। महारथी, घोड़े सवार, प्यादे। प्रजा में भी तीनों हैं। फर्स्ट क्लास, सेकण्ड क्लास, थर्ड क्लास होते हैं। फर्क होता है ना। वहाँ तो कर्म अकर्म हो जाता है। कितना समझाया जाता है। जितने का कल्याण करेंगे उतना ही एवजा मिलेगा। हरेक के अपने घर में चित्र रखे हुये हों। बोर्ड लगा पड़ा हो। एक त्रिमूर्ति, गोले का चित्र काफी है। कोई को समझाना भी सीखना चाहिए, नहीं तो क्या पद पावेंगे। ठठेरा नहीं बनना है। उनकी कान ठक-2 सुनते-2 वायरे हो जाते हैं, जैसे कि सुनते ही नहीं। वैसे ही तुमको ठठेरे मिसल कान नहीं होनी चाहिए। बाप जो कहे वह अमल करना है। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट और नमस्ते।